Mark 4:26-29

26 फिर उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे
कोई व्यक्ति खेत में बीज फैलाये।
27 रात को सोये और दिन को जागे और फिर बीज में
अंकूर निकलें, वे बड़ें और पता न ही चले कि यह सब
कैसे हो रहा है।
28 धरती अपने आप अनाज उपजाती है। पहले अंकुर
फिर बाल और फिर बालों में भरपूर अनाज।
29 जब अनाज पक जाता है तो वह तुरन्त उसे हंसिये
से काटता है क्योंकि फसल काटने का समय आ जाता
है।”

All verses from the Holy Bible quoted above in Hindi language are taken from the Hindi Easy-To-Read Version.

This is a Study-Aid Booklet for one of many Street Tracts found at...
JesusChristIndia.org
JesusChristNepal.org, JesusChristSriLanka.org,
JesusChristBurma.org, JesusChristThailand.org,
JesusChristChina.org, JesusChristTaiwan.org,
JesusChristKorea.org, JesusChristJapan.org ...
JesusChristUSA.org, JesusChristAmerica.org
& **JesusChristIsrael.org** as well...!

Visit these websites for free e-tracts (a.k.a. tract e-books), for paper-booklet printing patterns, Bible lessons, online Bible audio & more good stuff !
e-mail: ***etracts@yahoo.com*** *or* ***etracts@gmail.com***

Earth-Trekker's Guide *Godly Light For India* series
Study Aid 2. All Bible verses in **Hindi** for... Booklet 1,
Divine Selection. Prophecy Words of Jesus in **Mathew 24-25**.
Jesus predicts the future & the last days of the Earth!

Divine Selection

GOD'S DEVELOPMENTAL PROGRAM FOR EARTH

A Plan For Our Planet's Future

From YHWH, The Holy One Of Israel, The Creator Of All The Universe, Who Is Eternally The Light Of The World

This 8-Pages Study-Aid Booklet Is Printable & Includes All Bible Verses Of Matthew 24-25 Quoted In Hindi Language

Jesus Christ is God The Son, the Creator of All, the "Sun of Heaven," the "Sun of Righteousness," and the Light of the World...!

Courtesy of ***JesusChristIndia.org***.
Visit also *JesusChristNepal.org* & *JesusChristSriLanka.org*,
sites *JesusChristBurma.org* & *JesusChristThailand.org*,
sites *JesusChristChina.org* and *JesusChristTaiwan.org*,
sites *JesusChristKorea.org* and *JesusChristJapan.org* ...
for more print-patterns & free Bible-teaching lessons

Matthew 24

<1.> मंदिर को छोड़ कर यीशु जब वहाँ से होकर जा रहा था तो उसके शिष्य उसे मंदिर के भवन दिखाने उसके पास आये।

<2.> इस पर यीशु ने उनसे कहा, “तुम इन भवनों को सीधे खड़े देख रहे हो? मैं तुम्हें सब बताता हूँ, यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका नहीं रहेगा। एक एक पत्थर गिरा दिया जायेगा।”

<3.> यीशु जब जैतून पर्वत पर बैठा था तो एकांत में उसके शिष्य उसके पास आये और बोले, “हमें बता यह कब घटेगा? जब तू वापस आयेगा और इस संसार का अंत होने को होगा तो कैसे संकेत प्रकट होंगे?”

<4.> उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “सावधान! तुम लोगों को कोई छलने न पाये।

<5.> मैं यह इस लिए कह रहा हूँ कि ऐसे बहुत से हैं जो मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे ‘मैं मसीह हूँ’ और वे बहुतों को छलेंगे।

<6.> तुम पास के युद्धों की बातें या दूर के युद्धों की अफवाहें सुनोगे पर देखो तुम घबराना मत! ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं आया है।

<7.> हर एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़ा होगा। अकाल पड़ेंगें। हर कहीं भूचाल आयेंगे।

<8.> किन्तु ये सब बातें तो केवल पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।

<9.> “उस समय वे तुम्हें दण्ड दिलाने के लिए पकड़वायेंगे, और वे तुम्हें मरवा डालेंगे। क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो, सभी जातियों के लोग तुमसे घृणा करेंगे।

<10.> उस समय बहुत से लोगों का मोह टूट जायेगा और विश्वास डिग जायेगा। वे एक दूसरे को अधिकरियों के हाथों सौंपेंगे और परस्पर घृणा करेंगे।

<11.> बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे और लोगों को ठगेंगे।

<12.> क्योंकि अधर्मता बढ़ जायेगी सो बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा पड़ जायेगा।

<13.> किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसका उद्धार होगा।

<14.> स्वर्ग के राज्य का यह सुसमाचार समस्त विश्व में सभी जातियों को साक्षी के रूप में सुनाया जाएगा और तभी अन्त आएगा।

<15.> “इसलिए जब तुम लोग भयानक विनाशकारी वस्तु को, जिसका उल्लेख दानिय्येल नबी द्वारा किया गया था, मंदिर के पवित्र स्थान पर खड़े देखो,” (पढ़ने वाला स्वयं समझ ले कि इसका अर्थ क्या है)

<16.> “तब जो लोग यहूदिया में हों उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिये।

<17.> जो अपने घर की छत पर हो, वह घर से बाहर कुछ भी ले जाने के लिए नीचे न उतरे।

<18.> और जो बाहर खेतों में काम कर रहा हो, वह पीछे मुड़ कर अपने वस्त्र तक न ले।

<19.> उन स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी या जिनके दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन बहुत कष्ट के होंगे।

<20.> प्रार्थना करो कि तुम्हें सर्दियों के दिनों या सब्त के दिन भागना न पड़े।

<21.> उन दिनों ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने यह सृष्टि रची है, आज

Malachi 4:1-2

1 “न्याय का समय आ रहा है। यह गर्म भट्टी -सा होगा। वे सभी गर्वीलें
व्यक्ति दण्डित होंगे। वे सभी पापी लोग सूखी घास की तरह जलेंगे। उस
समय वे आग में ऐसी जलती झाड़ी-से होंगे जिसकी कोई शाखा याजड़
बची नहीं रहेगी।” सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।
2 “किन्तु, मेरे भक्तों, तुम पर अच्छाई उगते सूरज के समान चमकेगी
और यह सूरज की किरणों की तरह स्वास्थ्यवर्धक शक्ति देगी। तुम ऐसे ही
स्वतन्त्र और प्रसन्न होओगे जैसे अपने बाड़े से स्वतन्त्र हुए बछड़े।

It's extremely important for all of us to remember this:

1) **WE SPEAK TO TRIUNE YHWH GOD** by our prayers.

2) **TRIUNE YHWH GOD SPEAKS TO US** by the words of Holy Scripture, in the Word of God written by His Son.

So we must try to read His words and His Book just as often as we possibly can… on a daily basis!!

Matthew 13:47-50

47 “स्वर्ग का राज्य मछली पकड़ने के लिए झील में
फेंके गए एक जाल के समान भी है। जिसमें तरह तरह
की मछलियाँ पकड़ी गयी।
48 जब वह जाल पूरा भर गया तो उसे किनारे पर
खींच लिया गया। और वहाँ बैठ कर अच्छी मछलियाँ
छाँट कर टोकरियों में भर ली गयी किन्तु बेकार
मछलियाँ फेंक दी गयी।
49 सृष्टि के अन्त में ऐसे ही होगा। स्वर्गदूत आयेंगे और
धर्मियों में से पापियों को छाँट कर
50 धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस रोना और दाँत
पीसना होगा।”

सिक्कों की दस थैलियाँ हैं, इसे उसी को दे दो।

<29.> “क्योंकि हर उस व्यक्ति को, जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग किया, और अधिक दिया जायेगा। और जितनी उसे आवश्यकता है, वह उससे अधिक पायेगा। किन्तु उससे, जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग नहीं किया, सब कुछ छीन लिया जायेगा।

<30.> सो उस बेकार के दास को वह अन्धेरे में धकेल दो जहाँ लोग रोयेंगे और अपने दाँत पीसेंगे।”

<31.> “मनुष्य का पुत्र जब अपनी स्वर्गिक महिमा में अपने सभी दूतों समेत अपने शानदार सिंहासन पर बैठेगा

<32.> तो सभी जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की जायेंगी और वह एक को दूसरे से वैसे ही अलग करेगा, जैसे एक गड़रिया अपनी बकरियों से भेड़ों को अलग करता है।

<33.> वह भेंड़ो को अपनी दाहिनी और रखेगा और बकरियों को बाँई ओर।

<34.> “फिर वह राजा. जो उसके दाहिनी ओर है, उनसे कहेगा, ‘मेरे पिता से आशीष पाये लोगो, आओ और जो राज्य तुम्हारे लिये जगत की रचना से पहले तैयार किया गया है उसका अधिकार लो।

<35.> यह राज्य तुम्हारा है क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे कुछ खाने को दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे कुछ पीने को दिया। मैं पास से जाता हुआ कोई अनजाना था, और तुम मुझे भीतर ले गये।

<36.> मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाए। मैं बीमार था, और तुमने मेरी सेवा की। मैं बंदी था, और तुम मेरे पास आये।’

<37.> “फिर उत्तर में धर्मी लोग उससे पूछेंगे, ‘प्रभु, हमने तुझे कब भूखा देखा और खिलाया या प्यासा देखा और पीने को दिया?

<38.> तुझे हमने कब पास से जाता हुआ कोई अनजाना देखा और भीतर ले गये या बिना कपड़ों के देखकर तुझे कपड़े पहनाए?

<39.> और हमने कब तुझे बीमार या बंदी देखा और तेरे पास आये?’

<40.> “फिर राजा उत्तर में उनसे कहेगा, ‘मैं तुमसे सत्य कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे भोले-भाले भाइयों में से किसी एक के लिए भी कुछ किया तो वह तुमने मेरे ही लिये किया।’

<41.> “फिर वह राजा अपनी बाँई ओर वालों से कहेगा, ‘अरे अभागो! मेरे पास से चले जाओ, और जो आग शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गयी है, उस अनंत आग में जा गिरो।

<42.> यही तुम्हारा दण्ड है क्योंकि मैं भूखा था पर तुमने मुझे खाने को कुछ नहीं दिया,

<43.> मैं अजनबी था पर तुम मुझे भीतर नहीं ले गये। मैं कपड़ों के बिना नंगा था, पर तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाये। मैं बीमार और बंदी था, पर तुमने मेरा ध्यान नहीं रखा।’

<44.> “फिर वे भी उत्तर में उससे पूछेंगे, ‘प्रभु, हमने तुझे भूखा या प्यास या अनजाना या बिना कपड़ों के नंगा या बीमार या बंदी कब देखा और तेरी सेवा नहीं की।’

<45.> “फिर वह उत्तर में उनसे कहेगा, “मैं तुमसे सच कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे इन भोले भाले अनुयायियों में से किसी एक के लिए भी कुछ करने में लापरवाही बरती तो वह तुमने मेरे लिए ही कुछ करने में लापरवाही बरती।’

<46.> “फिर ये बुरे लोग अनंत दण्ड पाएँगे और धर्मी लोग अनंत जीवन में चले जायेंगे।”

तक कभी नहीं आयी और न कभी आयेगी।

<22.> और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटाने का निश्चय न कर लिया होता तो कोई भी न बचता किन्तु अपने चुने हुओं के कारण वह उन दिनों को कम करेगा।

<23.> उन दिनों यदि कोई तुम लोगों से कहे, ‘देखो, यह रहा मसीह’

<24.> या ‘वह रहा मसीह’ तो उसका विश्वास मत करना। मैं यह कहता हूँ क्योंकि कपटी मसीह और कपटी नबी खड़े होंगे और ऐसे ऐसे आश्चर्य चिन्ह दिखायेंगे और अदभुत काम करेंगे कि बन पड़े तो वह चुने हुओं को भी चकमा दे दे।

<25.> देखो मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है।

<26.> “सो यदि वे तुमसे कहे, ‘देखो वह जंगल में है’ तो वहाँ मत जाना और यदि वे कहें, ‘देखो वह उन कमरों के भीतर छुपा है’ तो उसका विश्वास मत करना।

<27.> मैं यह कह रहा हूँ क्योंकि जैसे बिजली पूरब में शुरू होकर पश्चिम के आकाश तक कौंध जाती है वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी प्रकट होगा!

<28.> जहाँ कहीं लाश होगी वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।

<29.> “उन दिनों जो मुसीबत पड़ेगी उसके तुरंत बाद: ‘सूरज काला पड़ जायेगा चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी आसमान से तारे गिरने लगेंगे और आकाश में महाशक्तियाँ झकझोर दी जायेंगी।’यशायाह 13:10; 34:4,5

<30.> “उस समय मनुष्य के पुत्र के आने का संकेत आकाश में प्रकट होगा। तब पृथ्वी पर सभी जातियों के लोग विलाप करेंगे और वे मनुष्य के पुत्र को शक्ति और महिमा के साथ स्वर्ग के बादलों में प्रकट होते देखेंगे।

<31.> वह जैसे स्वर की तुरही के साथ अपने दूतों को भेजेगा। फिर वे स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।

<32.> “अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो। जैसे ही उसकी टहनियाँ कोमल हो जाती हैं और कोंपलें फूटने लगती हैं तुम लोग जान जाते हो कि गर्मियाँ आने को हैं।

<33.> वैसे ही जब तुम यह सब घटित होते हुए देखो तो समझ जाना कि वह समय निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार तक।

<34.> मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ कि इस पीढ़ी के लोगों के जीते जो ही ये सब बातें घटेंगी।

<35.> चाहे धरती और आकाश मिट जायें किन्तु मेरा वचन कभी नहीं मिटेगा।”

<36.> “उस दिन या उस घड़ी के बारे में कोई कुछ नहीं जानता। न स्वर्ग में दूत और न स्वयं पुत्र। केवल परम पिता जानता हैं।

<37.> जैसे नूह के दिनों में हुआ, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

<38.> वैसे ही जैसे लोग जल प्रलय आने से पहले के दिनों तक खाते-पीते रहे, ब्याह-शादियाँ रचाते रहे जब तक नूह नाव पर नहीं चढ़ा।

<39.> उन्हें तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक जल प्रलय न आ गया और उन सब को बहा नहीं ले गया। मनुष्य के पुत्र का आना भी ऐसा ही होगा।

<40.> उस समय खेत में काम करते दो आदमियों में से एक को उठा लिया जायेगा और एक को वहीं छोड़ दिया जायेगा।

<41.> चक्की पीसती दो औरतों में से एक उठा ली जायेगी और एक वहीं पीछे छोड़ दी जायेगी।

<42.> “सो तुम लोग सावधान रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा स्वामी कब आ जाये।

<43.> याद रखो यदि घर का स्वामी जानता कि रात को किस घड़ी चोर आ जायेगा तो वह सजग रहता और चोर को अपने घर में सेंध नहीं लगाने देता।

<44.> इसलिए तुम भी तैयार रहो क्योंकि तुम जब उसकी सोच भी नहीं रहे होंगे, मनुष्य का पुत्र आ जायेगा।

<45.> “तब सोचो वह भरोसेमंद सेवक कौन है, जिसे स्वामी ने अपने घर के सेवकों के ऊपर उचित समय उन्हें उनका भोजन देने के लिए लगाया है।

<46.> धन्य है वह सेवक जिसे उसका स्वामी जब आता है तो कर्तव्य करते पाता है।

<47.> मैं तुमसे सत्य कहता हूँ वह स्वामी उसे अपनी समूची सम्पत्ति का अधिकारी बना देगा।

<48.> दूसरी तरफ़ सोचो एक बुरा दास है, जो अपने मन में कहता हैं मेरा स्वामी बहुत दिनों से वापस नहीं आ रहा है।

<49.> सो वह अपने साथी दासों से मार पीट करने लगता है। और शराबियों के साथ खाना पीना शुरु कर देता है।

<50.> तो उसका स्वामी ऐसे दिन आ जायेगा जिस दिन वह उसके आने की सौचता तक नहीं और जिसका उसे पता तक नहीं।

<51.> और उसका स्वामी उसे बुरी तरह दण्ड देगा और कपटियों के बीच उसका स्थान निश्चित करेगा जहाँ बस लोग रोते होंगे और दाँत पीसते होंगे।

Matthew 25

<1.> “उस दिन स्वर्ग का राज्य उन दस कन्याओं के समान होगा जो मशालें लेकर दूल्हे से मिलने निकलीं।

<2.> उनमें से पाँच लापरवाह थीं और पाँच चौकस।

<3.> पाँचों लापरवाह कन्याओं ने अपनी मशालें तो ले लीं पर उनके साथ तेल नहीं लिया।

<4.> उधर चौकस कन्याओं ने अपनी मशालों के साथ कुप्पियों में तेल भी ले लिया।

<5.> क्योंकि दूल्हे को आने में देर हो रही थी, सभी कन्याएँ ऊँघने लगी और पड़ कर सो गयी।

<6.> “पर आधी रात धूम मची, ‘आ हा! दूल्हा आ रहा है। उससे मिलने बाहर चलो।’

<7.> “उसी क्षण वे सभी कन्याएँ उठ खड़ी हुई और अपनी मशालें तैयार कीं।

<8.> लापरवाह कन्याओं ने चौकस कन्याओं से कहा, ‘हमें अपना थोड़ा तेल दे दो, हमारी मशालें बुझी जा रही हैं।’

<9.> “उत्तर में उन चौकस कन्याओं ने कहा, ‘नहीं! हम नहीं दे सकतीं। क्योंकि फिर न ही यह हमारे लिए काफी होगा और न ही तुम्हारे लिये। सो तुम तेल बेचने वाले के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।’

<10.> “जब वे मोल लेने जा ही रही थीं कि दूल्हा आ पहुँचा। सो वे कन्याएँ जो तैयार थीं, उसके साथ विवाह के उत्सव में भीतर चली गई और फिर किसी ने द्वार बंद कर दिया।

<11.> “आख़िरकार वे बाकी की कन्याएँ भी गई और उन्होंने कहा, ‘स्वामी, हे स्वामी, द्वार खोली, हमें भीतर आने दो।’

<12.> “किन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, ‘मैं तुमसे सच कह रहा हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।’

<13.> “सो सावधान रहो। क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा।

<14.> “स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान होगा जिसने यत्रा पर जाते हुए अपने दासों को बुला कर अपनी सम्पत्ति पर अधिकारी बनाया।

<15.> उसने एक को चाँदी के सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ दीं। दूसरे को दो और तीसरे को एक। वह हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार दे कर यात्रा पर निकल पड़ा।

<16.> जिसे चाँदी के सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ मिली थी, उसने तुरन्त उस पैसे को काम में लगा दिया और पाँच थैलियाँ और कामा ली।

<17.> ऐसे ही जिसे दो थैलियाँ मिली थी, उसने भी दो और कामा ली।

<18.> पर जिसे एक मिली थी उसने कहीं जाकर धरती में गढ़ा खोदा और अपने स्वामी के धन को गाड़ दिया।

<19.> “बहुत समय बीत जाने के बाद उन दासों का स्वामी लौटा और हर एक से लेखा जोखा लेने लगा।

<20.> वह व्यक्ति जिसे चाँदी के सिक्कों की पाँच थैलियाँ मिली थी, अपने स्वामी के पास गया और चाँदी की पाँच और थैलियाँ ले जाकर उससे बोला, ‘स्वामी, तुमने मुझे पाँच थैलियाँ सौंपी थी। चाँदी के सिक्कों की ये पाँच थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई है!’

<21.> “उसकेस्वामीनेउससेकहा,’शाबाश!तुम भरोसे के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में तुम विश्वास पात्र रहे, मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में शामिल हो।’

<22.> “फिर जिसे चाँदी के सिक्कों की दी थैलीयाँ मिली थी, अपने स्वामी के पास आया और बोला, ‘स्वामी, तूने मुझे चाँदी की दो थैलियाँ सौंपी थीं, चाँदी के सिक्कों की ये दो थैलियाँ और हैं जो मैंने कामाई है।’

<23.> “उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘शाबाश! तुम भरोसेके लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में तुम विश्वास पात्र रहे। मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में शामिल हो।’

<24.> “फिर वह जिसे चाँदी की एक थैली मिली थी, अपने स्वामी के पास आया और बोला, ‘स्वामी, मैं जानता हूँ तू बहुत कठोर व्यक्ति है। तू वहाँ काटता हैं जहाँ तूने बोया नहीं है, और जहाँ तूने कोई बीज नहीं डाला वहाँ फसल बटोरता है।

<25.> सो मैं डर गया था इसलिए मैंने जाकर चाँदी के सिक्कों की थैली को धरती में गाड़ दिया। यह ले जो तेरा हैं यह रहा, ले लो।’

<26.> “उत्तर में उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘तू एक बुरा और आलसी दास है, तू जानता है कि मैं बिन बोये काटता हूँ और जहाँ मैंने बीज नहीं बोये, वहाँ से फसल बटोरता हूँ

<27.> तो तुझे मेरा धन साहूकारों के पास जमा करा देना चाहिये था। फिर जब मैं आता तो जो मेरा था सूद के साथ ले लेता।’

<28.> “इसलिये इससे चाँदी के सिक्कों की यह थैली ले लो और जिसके पास चाँदी के